पूर्वोत्तर सीमा रेल [निर्माण]

मालीगाँव, गुवाहाटी-11

संवाद पत्र

बोगीबिल पुल

60 वाँ अंक [जनवरी - जून, 2024]

राजभाषा विभाग (निर्माण संगठन) / मालीगाँव द्वारा प्रकाशित

संरक्षक

श्री अरूण कुमार चौधरी, महाप्रबंधक,
पू.सी.रेल (निर्माण), मालीगाँव

मुख्य संपादक

श्री आशुतोष कुमार मिश्र,

मुख्य राजभाषा अधिकारी सह मुख्य इंजीनियर/निर्माण- 6

उप मुख्य संपादक

श्री अमोल चंद्रकांत इंगले,

उप मुख्य इंजीनियर (सर्वेक्षण) / निर्माण

संपादक

राजेश रंजन कुमार

राजभाषा अधिकारी / निर्माण

विषय अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	लेखक/कवि	पृष्ठ
1	संरक्षक के कलम से	-	1
2	मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.का संदेश	-	2
3	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि.का संदेश	-	3
4	संपादकीय	-	4
5	75वाँ गणतंत्र दिवस	-	5
6	निर्माण संगठन की विशेष उपलब्धियाँ	-	6-12
7	राजभाषा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियाँ	-	12-13
8	ड्राइविंग में एक नए युग की शुरूआत करें	श्री कुलदीप तिवारी, सीनि.से.इंजी./नि./योजना	14-19
9	वो छठ पूजा के दिन	श्री अमर कुमार, सीनि.से.इंजी./ नि. / निविदा	20-21
10	चुने हुए ईश्वर	श्री बिजित गोरा रामसियारी,पिऊन/नि.	22
11	असमिया समाज और उनकी संस्कृति	श्रीमती गायत्री मिलि, वरि.अनु./नि.	23-27
12	बीते दिनों की यादें	श्री अमर कुमार, सीनि.से.इंजी./नि./निविदा	28
13	पुरी अनप्लग्ड: द ट्रैवेल डायरीज ऑफ ए फैंटास्टिक फोर	श्री रवि रंजन कुमार, जूनि.इंजी./ नि./ अभिकल्प	29-31
14	दुल्हन	श्री सुजय साहा राय, उप मु.बि.इंजी./नि.	32
15	विचार के लिए भोजन@हम और हमारे बच्चे	श्री अर्चना दास, सीनि.से.इंजी./नि./सा.2	33-34
16	हिंदी कार्यशालाएँ	-	35
17	रेल की जवानी	मो.नुरूल ऐन,आशुलिपिक/नि./ कटिहार	36
18	सफर	मो.नुरूल ऐन,आशुलिपिक/नि./ कटिहार	36
19	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माणकी बैठक	-	37-38
20	रेल का सुखद अनुभव	मो.नुरूल ऐन,आशुलिपिक/नि./ कटिहार	39
21	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माणकी बैठक	-	40-41
22	क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता आधार वर्ष-2023	-	42
23	भरत का प्रयास	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण	43
-	-	-	-

संरक्षक के कलम से...

महाप्रबंधक (निर्माण)/मालीगांव कार्यालय के राजभाषा विभाग की गृह-पत्रिका "संवाद पत्र" के 60वें अंक का प्रकाशन हार्दिक प्रसन्नता का विषय है।

भाषा एक ऐसा माध्यम है जो सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नति की संवाहिका है। इसके माध्यम से ही समाज अपने ज्ञान के मशाल को वर्तमान से भावी पीढ़ी तक पहुँचाता है। इस पावन कार्य को अंजाम देने में हिंदी भाषा अपनी सर्वोत्तम भूमिका निभा रही है, खासतौर पर तब जब पूर्वोत्तर सीमा रेल के अंतर्गत दस राज्य आते हैं और इनमें बोलने वाले मूल निवासियों के अलावा अन्य राज्यों के भी विभिन्न भाषा-भाषी के लोग निवास करते हैं। इनमें से अधिकांश तो ऐसे हैं जो एक-दूसरे के समूदाय की भाषा बोलने व समझने में अनभिज्ञ हैं। ऐसी अवस्था में हिंदी ही एक सशक्त सेतु का कार्य करता है।

मुझे विश्वास है कि निर्माण संगठन में भी कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारीगण हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए मिलजुल कर प्रयास करेंगे।

संवाद-पत्र के प्रकाशन के लिए निर्माण संगठन का राजभाषा विभाग प्रशंसा का पात्र है।

हार्दिक शुभकामानाओं सहित !

अरूण कुमार चौधरी

(अरूण कुमार चौधरी)
महाप्रबंधक
पू.सी.रेल(निर्माण)

मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का संदेश

यह हर्ष का विषय है कि निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा छमाही पत्रिका "संवाद पत्र" के 60वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पूर्वोत्तर सीमा रेल के निर्माण संगठन का कार्य पूर्वोत्तर के आठ राज्यों के अलावा बंगाल एवं बिहार में भी फैला है जहाँ विभिन्न भाषा-भाषी एवं संस्कृति के लोग निवास करते हैं। इनका साहित्य एवं दर्शन भी भिन्न-भिन्न है। परन्तु इनमें विचारों की अभिव्यक्ति का सरल माध्यम तो हिंदी ही है। इसे आसानी से समझी एवं बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध एवं वैज्ञानिक भाषा है जिसे जैसा बोली जाती है वैसाहीलिखा जाता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया और तदनुसार इस संबंध में संवैधानिक प्रावधान किए गए।

मैं आशा करता हूँ कि निर्माण संगठन के अधिकारी एवं कर्मचारीगण अपने दैनिक सरकारी कार्य में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग कर प्रदत्त संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन करेंगे।

अनेकों शुभकामनाओं सहित !

24/7/24

(आशुतोष कुमार मिश्र)
मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण
सह मुख्य इंजीनियर/निर्माण-6
पू.सी.रेल,निर्माण

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा जनवरी - जून, 2024 सत्र की छमाही पत्रिका "संवाद पत्र" के 60वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जिन माध्यमों का सहारा लिया जाता है उनमें से हिंदी की पत्रिका का प्रकाशन एक सशक्त माध्यम है क्योंकि इस माध्यम के जरिये निर्माण संगठन के कर्मचारीगण हिंदी में अपनी रचना लिखकर प्रकाशित करवाते हैं जिससे उन्हें हिंदी में लिखने का अभ्यास बनता है और इसी अभ्यास के आधार पर उन्हें कार्यालय में कार्य करते समय हिंदी का प्रयोग कर पाने में सहुलियत मिलती है।

मैं अपनी शुभकामनाओं के साथ संवाद-पत्र नामक इस पत्रिका के भविष्य में उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

अमोल

(अमोल चंद्रकांत इंगले)
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण
सह उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण(सर्वेक्षण)
पू.सी.रेल, निर्माण

संपादकीय

संवाद पत्र का जनवरी से जून, 2024 तक का 60वाँ अंक सुधी पाठकों के कर-कमलों में समर्पित है। विभाग की इस गृह पत्रिका में विभागीय गतिविधियों के अलावा कर्मचारियों की मौलिक रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। इस कार्य से कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि बढती है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सिनेमा, दूरदर्शन, रेडियो, कला, संगीत, साहित्य, नाट्य, सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। उसी कड़ी में इस पत्रिका का भी एक गिलहरी सहयोग है। हमें प्रादेशिक भाषाओं के विशिष्ट तत्वों, भावों, शब्दों और प्रयोगों को आत्मसात् करते हुए हिंदी को सरल, आधुनिक, वैश्विक एवं तकनीकी के अनुरूप विकसित करने की चुनौतियों का सामना करना है। हिंदी के प्रचार-प्रसार की इसी क्रम में संवाद पत्र में तकनीकी, सूचनाप्रद एवं ज्ञानवर्धक लेख एवं कविताएँ प्रकाशित किए जा रहे हैं। ये लेख और कविताएँ हिंदी भाषा की जीवंतता व रोचकता को अभिव्यकत करते हैं।

इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी व सार्थक बनाने के लिए सुधी पाठकों के सुझावों का सर्वदा स्वागत है।

राजेश रंजन
26/07/2024

(राजेश रंजन कुमार)
राजभाषा अधिकारी
पू.सी.रेल/निर्माण

75 वाँ गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस के 75वें वर्षगांठ पर श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक (निर्माण) ने अपने भाषण में कहा कि 1950 में इसी शुभ दिन पर हम भारतीय नागरिक अपने लिए एक नए संविधान का गठन किए थे, जो हमारे कर्तव्य एवं जिम्मेदारियों, अधिकारों और विशेषाधिकारों तथा नियमों और कानूनों का मार्गदर्शक दस्तावेज बना। वर्ष 1979 में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) संगठन की स्थापना के बाद इस संगठन ने 1182 कि.मी. नई लाइनें, 2945 कि.मी. आमान परिवर्तन और 880.26 कि.मी. दोहरीकरण चालू किया है। इस संगठन ने तेजपुर में कलियाभोमोरा सड़क-पुल सहित महाबाहू ब्रह्मपुत्र पर पाँच पुलों में से चार का निर्माण किया है। 25 दिसंबर, 2018 को माननीय प्रधान मंत्री द्वारा उद्घाटन किए गए डिब्रूगढ के निकट बोगिबिल पुल ने असम और अरूणाचल प्रदेश के बीच एक वैकल्पिक छोटी रेल कनेक्टिविटी मार्ग प्रदान करने की लंबे समय से सामरिक आवश्यकता को पूर किया है। इसने अरूणाचल प्रदेश के पूर्वी तथा उनकी राजधानी शहर के लिए छोटा मार्ग भी प्रदान किया है, जो इस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक लंबा रास्ता तय करेगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान में यह संगठन 28 परियोजनाओं को संभाल रहा है जिनमें 19 नई लाइन परियोजनाएँ, 6 दोहरीकरण परियोजनाएँ और 3 रेल विद्युतीकरण परियोजनाएँ हैं। इन परियोजनाओं के पूरा हो जाने पर भारतीय रेल के नेटवर्क में हम 1598.262 कि.मी. नई रेल लाइनें जोड़ देंगे। उन्होंने कहा कि हम प्रत्येक राज्य की राजधानी तथा उससे भी आगे तक रेल लाइनें पहुँचाकर पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में कनेक्टिविटी में सुधार लाने के लिए विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं। इसको विस्तृत रूप में समझाने के लिए उन्होंने इस संबंध में प्रत्येक राज्यों में की जा रही प्रगति का उल्लेख किया। श्री पाण्डेय ने प्रमुख स्टेशनों के पुनर्विकास का उल्लेख करते हुए कहा कि पू.सी.रेल (निर्माण) न्यू जलपाईगुड़ी और डिमापुर स्टेशनों पर प्रमुख पुनर्विकास का काम किया जा रहा है। नई लाइन परियोजना के अंतर्गत आनेवाले स्टेशनों जैसे रंगपो, कामाख्या, इम्फाल आदि का निर्माण विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ किया जा रहा है। अंत में उन्होंने गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर बधाई देते हुए यह अपील की कि अधिकारी एवं कर्मचारीगण नए सिरे से समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम करें ताकि देश को और भी तेजी से लक्ष्य हासिल करने में सक्षम बनाया जा सके।

निर्माण संगठन की विशेष उपलब्धियाँ

1. श्री राव साहेब पाटिल दानवे, माननीय केन्द्रीय रेल, कोयला एवं खनन राज्य मंत्री द्वारा दिनांक 28.01.2024 को पूर्वोत्तर राज्यों की राजधानियों को जोड़ने संबंधी परियोजनाओं की समीक्षा की गयी ।

सिगनलिंग कार्य:

(क) महिसासन - जीरो प्वाइंट नई लाइन परियोजना के निर्माण के सिलसिले में दिनांक 11.01.2024 को महिसासन (MSSN) स्टेशन पर इलेक्ट्रॉनिक अंतर्पाशन को सफलतापूर्वक चालू किया गया।

(ख) महिसासन स्टेशन चालू करने के पश्चात कुल 2.7 कि.मी. के महिसासन - जीरो प्वाइंट परियोजना में से 2.5 कि.मी. क्षेत्र का कार्य पूरा हो चुका है। बांगलादेश हिस्से का कार्य बांगलादेश रेलवे द्वारा पूरा होने के बाद यह खण्ड चालू होगा।

(ग) महाप्रबंधक/निर्माण/पू.सी.रेल और मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण ने दिनांक 25.01.2024 को पुल एवं एल.डब्ल्यू.रेल मुद्दों पर लखनऊ में महानिदेशक/आरडीएसओ तथा संबंधित आरडीएसओ अधिकारियों के साथ सुरंगों एवं पटरियों पर एल.डब्ल्यू.रेल की बी.एल.टी निरंतरता के संदर्भ में विशेष रूप से चर्चा की।

(घ) दिनांक 29.01.2024 को नई दिल्ली में रेलवे बोर्ड द्वारा परियोजनाओं के राज्यवार समीक्षा बैठक तथा दिनांक 30.01.2024 को पड़ोसी देशों के साथ रेल कनेक्टिविटी बैठक में महाप्रबंधक/निर्माण पू.सी.रेल उपस्थित हुए।

(ङ) माह जनवरी, 2024 के दौरान महाप्रबंधक/निर्माण/पू.सी.रेल द्वारा निम्नलिखित निरीक्षण किए गए -

(i) दिनांक 01.01.2024 को सेवक-रंगपो नई लाइन परियोजना का निरीक्षण।

(ii) दिनांक 03.01.2024 को न्यू बंगाईगाँव-अगथोरी (वाया रंगिया) दोहरी लाइन परियोजना के अंतर्गत चांगसारी-अगथोरी खण्ड का निरीक्षण।

(iii) दिनांक 04.01.2024 को सरभोग-बरपेटा रोड खण्ड के बेकी नदी के बड़े पुल के निर्माण स्थल तथा न्यू बंगाईगांव-अगथोरी (वाया रंगिया) दोहरी लाइन परियोजना के बरपेटा रोड स्टेशन से पाठशाला के बीच दोहरीकरण कार्य की प्रगति का निरीक्षण।

(iv) दिनांक 13.01.2024 एवं 14.01.2024 को न्यू बंगाईगांव - अगथोरी (वाया रंगिया) दोहरी लाइन परियोजना के नलबाड़ी - रंगिया और बाइहाटा - रंगिया खण्ड का निरीक्षण।

(v) दिनांक 18.01.2024 को महिसासन - जीरो प्वाइंट नई लाइन परियोजना का निरीक्षण।

(vi) दिनांक 20.01.2024 एवं 21.01.2024 को अररिया - गलगलिया नई लाइन परियोजना का निरीक्षण।

2. न्यू बंगाईगांव - गोवालपारा - कामाख्या दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत बामुनीगांव से छयगांव (8.782 कि.मी.) दोहरीकरण कार्य का रेल संरक्षा आयुक्त का निरीक्षण दिनांक 28.02.2024 को सफलतापूर्वक पूरा हुआ और 90 कि.मी.प्रति घंटे की सेक्शनल गति के साथ प्राधिकार प्राप्त हुआ। सवारी एवं माल यातायात के लिए सेक्शन खोल दिया गया। इसी के साथ वर्ष 2023-24 में कुल 98.99 कि.मी. दोहरीकरण चालू किया गया।

सिगनलिंग कार्य:

(क) छयगाँव में नए ई.आई. एवं बामुनीगाँव में रद्दोबदल सहित बामुनीगाँव (अंतिम चरण) - छयगांव (चरण) दोहरी लाइन खण्ड संचार प्रणाली अर्थात् नियंत्रण संचार, बी.पी.ए.सी., यू.एफ.एस.बी.आई., यू.टी.एस., नए क्वाड एवं ओ.एफ.सी. केबल सहित पी.आर.एस., नए बिछाए गए 6 क्वाड केबल और ई.एम.सी.पोस्ट के माध्यम से प्रदान की गई नई ई.एम.सी. सहित सफलतापूर्वक दिनांक 28.02.2024 को चालू किया गया।

(ख) रेल विद्युतीकरण के संबंध में सिगनल एवं दूर संचार कार्य में परिवर्तन:

टांगला - हरिसिंगा - उदलागुड़ी - रौताबागान खण्ड में 25 कि.वो. रेल विद्युतीकरण कार्य के अनुकूल यूएफएसबी आई की स्थापना के साथ ई आई अद्यतीकरण का कार्य पूरा हो गया है। साथ ही, उदालगुड़ी में टावर वैगन साइडिंग चालू कर दिया गया है।

(ग)आर.ओ.बी. के संपर्क सड़क के निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण और बिजली के खंभों स्थानांतरित करने के संबंध में महाप्रबंधक/निर्माण/पू.सी.रेल ने दिनांक 09.02.2024 को अगरतला में त्रिपुरा सरकार के मुख्य सचिव के साथ बैठक की।

(घ) महाप्रबंधक/निर्माण/पू.सी.रेल द्वारा माह फरवरी, 2024 में निम्नलिखित निरीक्षण किए गए -

(i) दोहरीकरण एलाइन्मेंट अंतिम लोकेशन सर्वेक्षण के लिए दिनांक 09.02.2024 को चंद्रनाथपुर-अगरतला का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण।

(ii) दिनांक 10.02.2024 एवं 11.02.2024 को अगरतला-अखौरा अंतर्राष्ट्रीय परियोजना एवं अगरतला इलाके में आर.ओ.बी.कार्य का निरीक्षण।

(iii) दिनांक 13.02.2024 को न्यू बंगाईगाँव-अगथोरी (वाया रंगिया) दोहरी लाइन परियोजना के अंतर्गत पाठशाला-बरपेटा रोड खण्ड का निरीक्षण।

(iv) दिनांक 14.02.2024 को न्यू बंगाईगाँव-गोवालपारा-कामाख्या दोहरी लाइन परियोजना के अंतर्गत कामाख्या-आजरा खण्ड का मोटर ट्रॉली से निरीक्षण।

(v) दिनांक 17.02.2024 को बालूरघाट-हिली नई लाइन परियोजना का निरीक्षण।

(vi) दिनांक 18.02.2024 को कटिहार-मुकुरिया दोहरी लाइन परियोजना का निरीक्षण।

(vii) दिनांक 22.02.2024 को विद्युतीकरण-दोहरीकरण कार्य के लिए डिब्रूगढ-लामडिंग खण्ड का रियर विंडो निरीक्षण।

(vii) दिनांक 24.02.2024 को डिमापुर-कोहिमा नई लाइन खण्ड का निरीक्षण।

3. दोहरीकरण कार्य :-

(क) दिनांक 20.03.2024 को न्यू बंगाईगाँव - अगठोरी (वाया रंगिया) दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत बाइहाटा से चांगसारी (10.154 कि.मी.) दोहरीकरण कार्य का रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा सफलतापूर्वक निरीक्षण पूरा किया गया। दिनांक 20.03.2024 को 90 कि.मी.प्रति घंटे की सेक्शनल गति पर प्राधिकार प्राप्त करने के बाद यात्री एवं माल यातायात के लिए खोला गया।

इस कमिशनिंग के साथ - साथ वर्ष 2023-24 में कुल 109.14 कि.मी. दोहरीकरण चालू किया गया।

(ख) नई लाइन :

महीसासन-जीरो प्वाइंट (2.7 कि.मी.) में से 2.50 कि.मी.के नई लाइन का कार्य सहित महीसासन यार्ड (नो मैन्स लैंड के हिस्से को छोड़कर) का एन.आई. कार्य पूरा किया गया।

(ग) रेल विद्युतीकरण :

दिनांक 21.03.2024 को प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर, पू.सी.रेल द्वारा रेल विद्युतीकरण कार्य का वैधानिक निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात् पू.सी.रेल के कटिहार मंडल के सेक्शन कटिहार (को छोड़कर)-तेजनारायणपुर (को शामिल कर), 33 आर.के.एम. एवं 35 टी.के.एम. के लिए विद्युत लोको द्वारा स्पीड ट्रायल सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

(घ) दिनांक 24.03.2024 को प्रमुख मुख्य बिजली इंजीनियर, पू.सी.रेल द्वारा रेल विद्युतीकरण का वैधानिक निरीक्षण किया गया। तत्पश्चात् दिनांक 30.03.2024 को पू.सी.रेल के रंगिया मंडल के सेक्शन रंगिया (को शामिल कर) - ढ़ेकियाजुली रोड (को छोड़कर) 99.66 आर.के.एम. तथा 123.16 टी.के.एम. के लिए विद्युत लोको ट्रायल सफलतापूर्वक पूरा किया गया।

(ङ) वर्ष 2023-24 के दौरान पू.सी.रेल (निर्माण) द्वारा 174.49 आर.के.एम. तथा 209.29 टी.के.एम. रेल विद्युतीकरण चालू किया गया।

(च) रेल विद्युतीकरण से संबंधित सिगनल एवं दूर संचार कार्य में बदलाव:

दिनांक 22.03.2024 को रौताबागान-माजबात-ढेकियाजुली-न्यू मिसामारी सेक्शन में 25 कि.वो. रेल विद्युतीकरण कार्य के अनुकूल यू.एफ.एस.बी.आई. के संस्थापन सहित ई.आई. अपडेशन पूरा किया गया।

वर्ष 2023-24 के दौरान कुल 09 स्टेशनों, अर्थात् रंगिया मंडल (टांगला-न्यू मिसामारी) में 7, कटिहार मंडल (कटिहार - जोगबानी) में 1, लामडिंग मंडल (चापरमुख-सेनचोवा जं.) सेक्शन में 1 का ई.आई. अपडेशन पूरा किया गया।

(छ) दिनांक 14.03.2024 को मिजोरम सरकार के मुख्य सचिव के साथ भूमि अधिग्रहण, रेलवे के पक्ष में भूमि का दाखिल-खारिज एवं राज्य सरकार द्वारा स्टेशन तक संपर्क सड़क के निर्माण विषय पर आइजल में महाप्रबंधक (निर्माण)/ पू.सी.रेल की बैठक हुई।

(ज) माह मार्च, 2024 के दौरान महाप्रबंधक (निर्माण)/ पू.सी.रेल द्वारा निम्नलिखित निरीक्षण किए गए -

(i) दिनांक 07.03.2024 को कामाख्या - रंगिया दोहरीकरण कार्य तथा रंगिया - नाहरलगुन रेल विद्युतीकरण कार्य का रियर-विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण।

(ii) दिनांक 09.03.2024 तथा 10.03.2024 को अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना के अंतर्गत पावाखाली-ठाकुरगंज सेक्शन का निरीक्षण।

(iii) दिनांक 14.03.2024, 01.03.2024 तथा 16.03.2024 को भैरवी-सायरंग नई लाइन परियोजना का निरीक्षण।

(iv) दिनांक 21.03.2024 को न्यू बंगाईगाँव-अगठोरी (वाया रंगिया) दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत बाइहाटा-चांगसारी सेक्शन का रेल विद्युतीकरण और दोहरीकरण कार्य का निरीक्षण।

(v) दिनांक 22.03.2024 को न्यू बंगाईगाँव-अगठोरी (वाया रंगिया) के अंतर्गत घोघरापारा-नलबाड़ी सेक्शन का निरीक्षण।

4. नई लाइन:

दिनांक 29.04.2024 एवं 30.04.2024 को सीसीआरएस द्वारा अररिया-गलगलिया नई लाइन परियोजना (110.75 कि.मी.) के ठाकुरगंज-पावाखाली सेक्शन (22 कि.मी.) का वैधानिक निरीक्षण किया गया। यात्री यातायात के परिचालन के लिए सेक्शन खोलने के प्राधिकार की प्रतीक्षा है।

रेल विद्युतीकरण:

माह अप्रैल, 2024 में लामडिंग मंडल के चापरमुख-सेनचोवा-मैराबारी तथा सेनचोवा-सिलघाट टाऊन के ताराबारी एसएससी, सेनचोवा एएसपी, आओनी एसएसपी, जखलाबांधा एसएसपी तथा पू.सी.रेल के कटिहार मंडल के एकलाखी-बालुरघाट सेक्शन के रामपुर बाजार एसएसपी में एससीएडीए चालू किया गया।

सिगनलिंग कार्य:

पावाखाली में नया ईआइ तथा ठाकुरगंज में मौजूदा ईआइ में बदलाव, ठाकुरगंज एवं पावाखाली में आईपी एमपीएलएस उपकरण संस्थापित कर चालू किया गया। ठाकुरगंज एवं पावाखाली के बीच सीएनएल संचार, बीपीएसी, यूएफएसबीआइ एवं वीएचएफ संचार स्थापित किया गया और सीआरएस निरीक्षण किया गया।

दिनांक 05.04.2024 को अध्यक्ष रेलवे बोर्ड तथा मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड द्वारा सेवक-रंगपो नई लाइन परियोजना का निरीक्षण किया गया।

माह अप्रैल, 2024 के दौरान महाप्रबंधक (निर्माण)/ पू.सी.रेल द्वारा निम्नलिखित निरीक्षण किए गए:

(i) दिनांक 12.04.2024 को जोवाई-चंद्रनाथपुर सेक्शन का एफएलएस कार्य
(ii) दिनांक 23.04.2024 को न्यू जलपाईगुड़ी में विश्वस्तरीय स्टेशन का कार्य
(iii) दिनांक 27.04.2024 को न्यू हाफलॉग-जटिंगा बैंक स्लिपेज स्थल
(iv) दिनांक 30.04.2024 को पासीघाट-परशुराम कुंड सर्वेक्षण कार्य

4. दोहरीकरण:-

बरपेटा रोड-पाठशाला खंड (21.40 किमी) में दोहरीकरण के सभी कार्य पूरे हो चुके हैं और निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 2 और 3 जून को रेल संरक्षा आयुक्त का निरीक्षण किया गया है।

रेल विद्युतीकरण:-

मई' 24 के महीने में, पू.सी.रेल के रंगिया मंडल के रंगिया - ढेकियाजुली रोड सेक्शन में रंगीन लाइट सिग्नलिंग की आपूर्ति बढ़ाने के लिए 12 सहायक ट्रांसफार्मर के साथ ढेकियाजुली रोड, हरिसिंगा, रौताबागान और माजबात में कुल 04 स्विचिंग स्टेशन चालू किए गए हैं।

सदस्य, आधारभुत संरचना, रेलवे बोर्ड ने दिनांक 13.05.2024 को भैरबी - सैरंग नई लाइन परियोजना, दिनांक 14.05.2024 को जिरीबाम - इंफाल नई लाइन परियोजना के जिरीबाम - खोंगसांग खंड और दिनांक 15.05.2024 को अगरतला - निश्चिंतपुर अंतर्राष्ट्रीय परियोजना का निरीक्षण किया गया। महाप्रबंधक/ निर्माण और संबंधित मुख्य प्रशासनिक अधिकारी भी निरीक्षण के दौरान सदस्य, आधारभुत संरचना के साथ थे।

माह मई, 2024 के दौरान महाप्रबंधक/ निर्माण/ पू.सी.रेल द्वारा निम्नलिखित निरीक्षण किए गए:

I) दिनांक 01.05.2024 को मुरकोंगसेलेक-पासीघाट नई लाइन परियोजना।

Ii) दिनांक 02.05.2024 और 03.05.2024 को डिमापुर-कोहिमा नई लाइन परियोजना।

Iii) दिनांक 18.05.2024 को छयगांव-मिर्जा दोहरी लाइन कार्य का निरीक्षण।

Iv) दिनांक 22.05.2024 को तेजपुर-सिलघाट नई लाइन परियोजना का संरेखण।

v) दिनांक 27.05.2024 को बोगीबील पुल और डिब्रूगढ़ - रंगिया विद्युतीकरण कार्य का रियर विंडो निरीक्षण।

राजभाषा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धियाँ

1. रंगिया मंडल के अंतर्गत अगठोरी स्टेशन के स्टेशन संचालन नियम के 150 (एक सौ पचास) पृष्ठों में से 98 (अंठानवे) पृष्ठों का, बामुनीगाँव के 262 (दो सौ बासठ) एवं छयगांव स्टेशन के 262 (दो सौ बासठ) पृष्ठों का तथा बरपेटा के 200 (दो सौ) पृष्ठों के स्टेशन संचालन नियम का अनुवाद एवं टंकण किया गया।
2. दिनांक 28.01.2024 को 10.30 बजे माननीय रेल, कोयला एवं खनन राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री रावसाहेब दानवे का पूर्वोत्तर में राजधानियों को जोड़ने संबंधी परियोजना की समीक्षा बैठक में गरिमामयी उपस्थिति के दौरान निर्माण संगठन के सभी अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किए जानेवाले 63 (तिरसठ) स्लाइडों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण एवं विधिक्षा की गई।
3. अलीपुरद्वार स्थित उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण कार्यालय का दिनांक 09.01.2024 को तथा उप मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर/निर्माण कार्यालय का दिनांक 10.01.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया तथा हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए कर्मचारियों की सूची प्राप्त की गयी तथा उक्त सूची के आधार पर फॉर्म भरवाने के लिए राजभाषा अधिकारी/ अलीपुरद्वार को कार्य सुपुर्द किया गया और रंगिया स्थित उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण कार्यालय का दिनांक 14.03.2024 को तथा डिमापुर स्थित उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण-1 एवं 2 कार्यालय का 15.03.2024 को राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण किया गया तथा हिंदी भाषा प्रशिक्षण में नामित करने के लिए अप्रशिक्षित कर्मचारियों की सूची प्राप्त की गयी।
4. गणतंत्र दिवस के अवसर पर महाप्रबंधक/निर्माण के अंग्रेजी भाषण का हिंदी अनुवाद किया गया।
5. दिसंबर, 2023 की समाप्त तिमाही की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक दिनांक 27.02.2024 को आयोजित की गयी।

6. क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के दौरान ही निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित हिंदी ऑनलाइन पत्रिका संवाद-पत्र के 59वें अंक का महाप्रबंधक (निर्माण) द्वारा विमोचन किया गया।
7. दिनांक 27.02.2024 को तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें विशेष रूप से आमंत्रित किए गए मालीगांव स्थित पूर्वोत्तर सीमा रेल, केन्द्रीय अस्पताल के अपर मुख्य स्वास्थ्य निदेशक डॉ. श्री सोमनाथ साहा ने "स्वस्थ और तनावमुक्त जीवन जीने का रहस्य" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
8. राजभाषा विभाग में दिनांक 18.03.2024 से 22.03.2024 तक 05 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गयी इन कार्यशालाओं में विभिन्न विभागों के कुल 64 (चौंसठ) कर्मचारियों ने भाग लिया।
9. दिनांक 21.03.2024 को निर्माण संगठन के कर्मचारियों को हिंदी कुंजीयन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
10. दिनांक 22.03.2024 को निर्माण संगठन के कर्मचारियों को हिंदी वॉयस टाइपिंग प्रशिक्षम प्रदान किया गया।
11. निर्माण संगठन की हिंदी मासिक प्रगति रिपोर्ट प्रत्येक महीने अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड तथा इसकी प्रतिलिपि सदस्य अवसंरचना, रेलवे बोर्ड के पास ई-मेल के माध्यम से प्रेषित किया गया।
12. रंगिया मंडल के अंतर्गत आमजोंगा स्टेशन के 228 (दो सौ अठाइस) पृष्ठों, केन्दुकोना स्टेशन के 121 (एक सौ इक्कीस) पृष्ठों तथा सरभोग स्टेशन के 80 (अस्सी) पृष्ठों का स्टेशन संचालन नियम का अनुवाद एवं टंकण किया गया।
13. दिनांक 06.05.2024 को राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्वारा उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण, कटिहार का राजभाषा कार्यान्वन संबंधी निरीक्षण किया गया।
14. निर्माण संगठन के 19 (उन्नीस) अधिकारी एवं कर्मचारियों को जून, 2024 में आयोजित प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत परीक्षाओं के प्रवेश पत्र वितरीत करने संबंधी पत्र तैयार कर वितरीत किया गया।
15. रंगिया जंक्शन के 61 (इकसठ) पृष्ठों, घोघ्रापार स्टेशन के 67 (सड़सठ) पृष्ठों तथा रहमतपुर स्टेशन के 33 (तैंतीस) पृष्ठों का स्टेशन संचालन नियम का अनुवाद एवं टंकण किया गया।
16. जून महीने में निर्माम संगठन के टेलीफोन निर्देशिका एवं संगठन चार्ट का हिंदी में अनुवाद कर निर्माण संगठन के हिंदी वेबसाइट पर अपलोड किया गया।
17. दिनांक 19.06.2024 से 21.06.2024 तक तथा दिनांक 24.06.2024 और 25.06.2024 कुल 5 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 30 (तीस) कर्मचारीगण सम्मिलित हुए।
18. क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की जनवरी-मार्च, 2024 तिमाही की बैठक दिनांक 07.06.2024 को ओयोजित की गई।
19. निर्माण संगठन में क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिताएँ क्रमश: दिनांक 26.06.2024, 27.06.2024 एवं 28.06.2024 को आयोजित की गईं जिसमें कुल 21 (इक्कीस) प्रतिभागीगण भाग लिए। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित अखिल रेल हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भेजा जाता है।

ड्राइविंग में एक नए युग की शुरूआत करें

श्री कुलदीप तिवारी, सीनि. सेक्शन इंजीनियर/निर्माण

इलेक्ट्रिक वाहन- लाभ और चुनौतियाँ

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इलेक्ट्रिक वाहनों का युग सही मायने में आ चुका है। शून्य उत्सर्जन के साथ इलेक्ट्रिक वाहन न केवल वायु प्रदुषण का प्रत्यक्ष उपचार है, बल्कि ये तेल आयात को कम करने में भी मदद करेंगे।

हाल के वर्षों में इलेक्ट्रिक वाहनों के उत्पादन और बिक्री में उल्लिखनीय वृद्धि हुई है। कई प्रमुख ऑटोमोबाइल निर्माताओं ने इलेक्ट्रिक वाहन तकनीक में भारी निवेश किया है और बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इलेक्ट्रिक मॉडल की एक विस्तृत श्रृंखला लॉच कर रहे हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती उपलब्धता और विविधता इस धारणा को पुष्ट करती है कि सही मायने में इलेक्ट्रिक वाहनों का युग आ गया है।

इलेक्ट्रिक वाहनों के अंगीकरण को गति देने में बैटरी प्रौद्योगिकी और अवसंरचना में प्रगति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अधिक कुशल और सस्ती बैटरियों के विकास ने इलेक्ट्रिक वाहनों की ड्राइविंग रेंज प्रति चार्जिंग तय की जा सकने वाली दूरी को बढ़ा दिया है, जिससे उपभोक्ताओं के लिए रेंज संबंधी चिंता कम हो गई है। इससे अतिरिक्त, सार्वजनिकि चार्जिंग स्टेशनों और घरेलू चार्जिंग समाधानों सहित चार्जिंग अवसंरचना के विस्तार ने चालकों के लिए इलेक्टिक वाहनों की सुविधा एवं अभिगम्यता में सुधार किया है।

इसके अलावा, दुनिया भर की सरकारी और नीतिनिर्माताओं ने जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने तथा उत्सर्जन को कम करने के साधन के रूप में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए एक प्रबल प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है।

इलेक्ट्रिक वाहन महत्वपूर्ण क्यों है?

पर्यावरणीय लाभ - इलेक्ट्रिक वाहनों में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में उल्लेखनीय कमी लाने और जलवायु परिवर्तन का मुकाबला कर सकने की क्षमता है।

जीवाश्म इंधन इंजन से चालित वाहनों के विपरीत इलेक्ट्रिक वाहन शून्य टेलपाइप उत्सर्जन करते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन कार्बन डाइऑक्साइड और ऐसे अन्य प्रदूषकों को कम करने में मदद करते हैं जो वायु प्रदूषण, स्मॉग एवं ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन नाइट्रोजन ऑक्साइड, पार्टिकूलेट मैटर और वाष्पशील कार्बनिक योगिकों जैसे हानिकारक प्रदूषकों को कम करने में मदद करते हैं।

इसका सार्वजनिक स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि स्वच्छ हवा शवसन एवं हृदय रोगों के जोखिम को कम करती है।

उर्जा विविधता और सुरक्षा - इलेक्ट्रिक वाहन तेल आयात पर निर्भरता कम करके उर्जा विविधता लाने में योगदान करते हैं।

चूँकि बिजली ग्रिड को ऊर्जा स्त्रोतों के मिश्रण से संचालित किया जा सकता है, जिसमें सौर एवं पवन जैसे नवीनीकरणीय स्त्रोत शामिल हैं, इलेक्ट्रिक वाहन स्वच्छ एवं अधिक संवहनीय उर्जा विकल्पों की ओर परिवहन क्षेत्र के संक्रमण का अवसर प्रदान करते हैं।

यह तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव से संबद्ध भेद्यता को कम करता है और जीवाश्म इंधन के आयात पर निर्भरता को कम करके ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाता है।

तकनीकी प्रगति और रोजगार सृजन - इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास और अंगिकरण से बैटरी प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रिक ड्राइवट्रेन और चार्जिंग अवसंरचना में तकनीकी प्रगति को प्रेरणा प्राप्त हुई है।

इन प्रगतियों से न केवल मोटर वाहन क्षेत्र को लाभ हो रहा है बल्कि इनसे व्यापक अनुप्रयोग भी संबद्ध है, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों के लिए ऊर्जा भंडारण और ग्रिड स्थिरता।

इलेक्ट्रिक गतिशीलता बैटरी विनिर्माण, नवीकरणीय ऊर्जा और चार्जिंग अवसंरचना क्षेत्र में रोजगार एवं नवाचार का सृजन करती है।

दीर्घावधिक लागत बचत - इलेक्ट्रिक वाहनों की परिचालन लागत कम होती है, क्योंकि बिजली आमतौर पर गैसोलीन या डीजल से सस्ती होती है।

इसके अलावा, इलेक्ट्रिक वाहनों में चलायमान अंगों की संख्या कम होती है और इन्हें कम रखरखाव की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप समय के साथ सर्विसिंग एवं मरम्मत का खर्च कम रहता है।

शहरों की भीड़भाड़ को कम करना - इलेक्ट्रिक वाहन साझा गतिशीलता और कॉम्पैक्ट डिजाइन को बढ़ावा देकर शहरों में भीड़भाड़ कम करने में मदद कर सकते हैं।

साझा गतिशीलता का तात्पर्य है वाहनों के उपयोग को व्यक्तिगत संपत्ति के बजाए सेवा के रूप में उपयोग करना। इससे सड़क पर वाहनों की संख्या और पार्किंग की आवश्यकता को कम किया जा सकता है।

कॉम्पैक्ट डिजाइन छोटे और हल्के वाहनों के उपयोग को संदर्भित करता है जो शहरी स्थानों में अधिक आसानी से संगत हो सकते हैं। यह भीड़भाड़ और उत्सर्जन को भी कम कर सकता है।

कम अंतरा-शहर दूरी, दैनिक यात्रा और ऐसे अन्य परिवहन के लिए अभिनव एवं भविष्योन्मुखी स्मार्ट इलेक्ट्रिक वाहनों को बड़ा बैटरी की आवश्यकता नहीं होगी। इसका अर्थ है कि बैटरी रिचार्ज के लिए कम समय लगेगा और कम लागत आएगी।

इलेक्ट्रिक वाहनों के समक्ष विद्यमान चुनौतियाँ

उच्च आरंभिक लागत - पारंपरिक वाहनों की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने की अग्रिम लागत अपेक्षाकृत अधिक है। उच्च आरंभिक लागत कई संभावित खरीदारों के लिए कम वहनीय बनाती है और इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग को सीमित करती है।

यह लागत अंतर मुख्य रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग की जाने वाली महँगी बैटरी प्रौद्योगिकी के कारण है।

सीमित चार्जिंग अवसंरचना - भारत में चार्जिंग अवसंरचना अभी भी विकास के आरंभिक चरण में है और प्रमुख शहरों में ही केंद्रीत है।

एक सुदृढ़ एवं व्यापक चार्जिंग नेटवर्क की कमी इलेक्ट्रिक वाहनों के मालिकों के लिए असुविधा उत्पन्न करती है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो अपार्टमेंट में रहते हैं या जिनके पास समर्पित पार्किंग सुविधा नहीं है।

रेंज एंग्जाइटी - रेंज एंग्जाइटी का तात्पर्य है ड्राइविंग के दौरान बैटरी खत्म होने का भय या चिंता। सीमित ड्राइविंग रेंज इलेक्ट्रिक वाहनों के अंगीकरण की राह में एक प्रमुख चुनौती है।

यद्यपि इलेक्ट्रिक वाहनों के रेंज में सुधार हो रहा है, फिर भी यह धारणा व्याप्त है कि इलेक्ट्रिक वाहन लंबी दूरी की यात्रा के लिए पर्याप्त रेंज की पेशकश नहीं कर सकते हैं, विशेष रूप से भारत जैसे विशाल दूरी वाले देश में।

इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी समय के साथ खराब हो जाती है, जिससे रेंज में कमी आ सकती है।

बैटरी प्रौद्योगिकी और आपूर्ति श्रृंखला - लिथियम-आयन बैटरी, जो इलेक्ट्रिक वाहनों का एक प्रमुख घटक है, के उत्पादन के लिए विशिष्ट खनिजों एवं दुर्लभ मृदा तत्वों की आवश्यकता होती है।

भारत वर्तमान में बैटरी निर्माण के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

इलेक्ट्रिक वाहनों का चार्जिंग समय पारंपरिक वाहनों में इंधन भरने के समय से अधिक है, जो उनकी सुविधा और उपयोगिता को प्रभावित करता है।

सीमित मॉडल विकल्प - वर्तमान में भारत में पारंपरिक वाहनों की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहन मॉडल की उपलब्धता अपेक्षाकृत सीमित है।विविध उपभोक्ता प्राथिमिकताओं एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बाजार को वहनीय इलेक्ट्रिक वाहनों सहित विभिन्न खण्डों में अधिक विकल्पों की आवश्यकता है।

इलेक्ट्रीक वाहन के अंगीकरण को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख सरकारी पहलें -

फेम योजना द्वितीय - यह इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं और खरीदारों के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है। इन प्रोत्साहनों में सब्सिडी कर छूट, अधिमान्य वित्तपोषण और सड़क कर एवं पंजीकरण शुल्क से छूट शामिल हैं।

नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन प्लान - यह राजकोषीय प्रोत्साहन प्रदान करके वर्ष, 2020 से वर्ष - दर - वर्ष हाइब्रिड एवं इलेक्ट्रिक वाहनों की 6-7 मिलियन बिक्री हासिल करने का लक्ष्य निर्धारित करता है।

परिवर्तनकारी गतिशीलता और बैटरी भंडारण पर राष्ट्रीय मिशन - यह इलेक्ट्रिक वाहनों के अंगीकरण के लिए एक व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने और भारत में गिगास्केल बैटरी निर्माण संयंत्रों की स्थापना को समर्थन देने का लक्ष्य रखता है।

उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन योजना - यह इलेक्ट्रिक वाहनों और उसके घटकों के विनिर्माण के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है।

वाहन स्क्रैपिंग नीति - यह पुराने वाहनों की स्क्रैपिंग और नए इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है।

गो इलेक्ट्रिक अभियान - इसका उद्येश्य इलेक्ट्रिक वाहनों और इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग अवसंरचना के लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

भारत विश्व के उन कुछ देशों में से एक है जो वैश्विक EV30@30 अभियान का समर्थन करता है, जिसका लक्ष्य वर्ष, 2030 नए वाहनों की बिक्री में कम से कम 30 प्रतिशत के इलेक्ट्रिक वाहन होने को सुनिश्चित करना है।

विद्युत मंत्रालय ने चार्जिंग अवसंरचना पर अपने संशोधित दिशानिर्देशों में निर्धारित किया है कि 3 कि.मी. के ग्रिड में और राजमार्गों के दोनों किनारों पर प्रत्येक 25 कि.मी. पर कम से कम एक चार्जिंग स्टेशन मौजूद होना चाहिए।

आवासीय और शहरी कार्य मंत्रालय ने भी मॉडल भवन उपनियम, 2016 में संशोधन किया है जहाँ आवासीय एवं वाणज्यिक भवनों में इलेक्ट्रिक वाहनों की चार्जिंग सुविधाओं के लिए पार्किंग स्पेस के 20 प्रतिशत को अलग रखने को अनिवार्य बनाया गया है।

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों को अंगीकरण के लिए आगे की राह -

उपभोक्ताओं और निर्माताओं दोनों के लिए सब्सिडी, कर प्रोत्साहन एवं वित्तपोषण योजनाएँ प्रदान कर इलेक्ट्रीक वाहन अपनाने की आरंभिक लागत को कम करना।

मूल उपकरण निर्माताओं, स्टार्ट-अप और अन्य हितधारकों के बीच नवाचार, प्रतिस्पर्धा एवं सहयोग को प्रोत्साहित कर इलेक्ट्रिक वाहनों के विकल्प को बढ़ाना।

प्रोत्साहन और सहायक नीतियों के माध्यम से इलेक्ट्रिक वाहनों एवं संबंधित घटकों के घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करना।

इलेक्ट्रिक वाहनों के लाभों और प्रदत्त प्रोत्साहनों के बारे में अभियान, पोर्टल और प्लेटफॉर्म लॉन्च करने के माध्यम से जनता में जागरूकता का प्रसार करना।

नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों, स्मार्ट ग्रिड और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों में निवेश के माध्यम से बिजली वितरण एवं आपूर्ति में सुधार लाना।

फास्ट चार्जिंग और बैटरी-स्वैपिंग तकनीकों एवं मानकों को विकसित करके इलेक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग समय को कम करना।

पर्याप्त गुणवत्ता और अभगम्यता के साथ देश भर में सार्वजनिक एवं निजी चार्जिंग स्टेशनों का नेटवर्क स्थापित कर इलेक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग अवसंरचना का विस्तार करना।

इलेक्ट्रिक वाहनों के रखरखाव और सर्विसिंग के लिए तकनीशियनों, मेकैनिक एलं डीलरों को प्रशिक्षण और प्रमाण-पत्र प्रदान कर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए सेवा केंद्र एवं मरम्मत विकल्पों की वृद्धि करना।

सार्वजनिक परिवहन प्राधिकरणों सहित सरकारी संस्थानों को अपने बेड़े में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना। यह इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए बड़ी मांग पैदा करेगा, बाजार को प्रोत्साहित करेगा और इलेक्ट्रिक गतिशीलता की व्यवहार्यता प्रदर्शित करेगा।

एक घरेलू बैटरी विनिर्माण पारितंत्र विकसित करना और आयात पर निर्भरता कम करना भी महत्वपूर्ण है। हाल ही में राजस्थान में लीथियम की खोज इस दिशा में अत्यंत आशाजनक प्रगति है।

निष्कर्ष

भारत ने UNFCC COP26 में वर्ष, 2070 तक शुद्ध शून्य प्राप्त करने का एक अत्यंत महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में इलेक्ट्रिक वाहनों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। जबकि इलेक्ट्रिक वाहन स्वयं शून्य टेलपाइप उत्सर्जन करते हैं, इलेक्ट्रिक वाहनों का समग्र पर्यावरणीय प्रभाव उन्हें चार्ज करने के लिए उपयोग की जाने वाली बिजली के स्त्रोत पर निर्भर करेगा। यदि बिजली सौर पवन जैसै नवीकरणीय स्त्रोत से प्राप्त होगी तो इससे संबद्ध पर्यावरणीय लाभ भी अधिकतम होगा।

“मौन का अनुभव करें गति को महसुस करें”

वो छठ पूजा के दिन

- श्री अमर कुमार
सीनि. सेक्शन इंजीनियर / निर्माण/ निविदा

बिहार और छठ पूजा के रिश्ता के बारे मुझे नहीं लगता की किसी को कुछ बताने की ज़रूरत है। एक बिहारी परिवार चाहे वो अमीर हो या ग़रीब सभी छठ पूजा बड़े ही धूमधाम से मनाते हैं। बिहार के ग्रामीण इलाकों की जनसंख्या छठ पूजा के टाइम पर ही मालूम परता है।

बात उन दिनों की है जब हम बचपन में छठ पूजा मनाने के लिए हमलोग अपने गाँव जाया करते थे। हम का मतलब यहाँ मैं से है। असल में हम बिहारी में नहीं बोल पाते। दिवाली पूजा वैसे तो हमारे लिए भी बहुत बड़ा पर्व हैं परन्तु बिहार में छठ पूजा का एक अलग ही स्थान हैं जो सभी पर्वों से काफी ऊपर हैं। दिवाली खत्म होते ही हम अगली सुबह तैयार हो जाते थे एक एडवेंचरस ट्रिप के लिए जो कि अगले एक सप्ताह तक चलने वाला होता था। सुबह सुबह ही पापा जीप बुला लिया करते थे। महज २० कि.मी. की यात्रा के लिए हम ऐसे तैयार होते थे जैसे कही विदेश जा रहे हों।

ये २० कि.मी. की यात्रा खूबसूरत गाँवों से गुजरते हुए पूरी करनी पड़ती थीं। टूटे हुए रास्तों के दोनों तरफ़ का नजारा इतना खूबसूरत होता था कि हम खराब सड़क की तरफ़ देखते भी ना थे। और तो और रास्ते भर छठी माता के गीत शारदा सिन्हा की आवाज में सुनना अपने आप में एक अलग ही अनुभव होता था, जिसको शब्दों में बयान नहीं कर सकते। ३ घण्टे की सफ़र के बाद हम अपने गाँव पहुँचते थे और फिर शुरू होता था हमारा साक्षात्कार। गाँवों के जो भी बुजुर्ग मिलते वो कुछ ना कुछ तब तक पूछते जब तक आप उनके किसी एक प्रश्न का उत्तर ना दे पायें फिर वो ऐसे मुसकुराते थे जैसे मानो उन्होंने मुझे

नहीं पूरे शहरी परिवेश को हरा दिया हो अपने अखंड ज्ञान से। खैर शाम को हम जितने भी बच्चे इकट्ठे होते और गाँव की सैर को निकल पड़ते। कभी क्रिकेट खेलना कभी छुपन - छुपायी। सारा गाँव ही अपना लगता था। रात को दादी माँ की कहानियाँ सुनते - सुनते कब सो जाते थे पता ही नहीं चलता था।

अगले दिन सुबह - सुबह चित्रगुप्त पूजन करने के बाद भाई- दुज भी मनाया जाता था। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर धागा बांध कर लंबी उम्र की प्रार्थना करती थी। दोपहर का ख़ाना चित्रगुप्त मंदिर पर होता था और हाँ पूजा के बीच में सभी बड़े लोग अपना आमद और खर्चा लिखते थे और हम सभी बच्चे ५ भगवान का नाम लिख कर चित्रगुप्त भगवान की चरणों में चढ़ा दिया करते थे। रात को वीसीआर पर नयी मूवी लगती थी जिसको देखने के लिए पूरा गाँव उमर पड़ता था। अगले दिन पूरे धुम - धाम से पूरे गाँव में मूर्ति की परिक्रमा कर मूर्ति विसर्जन किया जाता था। फिर अगले ३ दिन हम छठ महापर्व के घाट की तैयारियों तथा दिवाली में बचाये पटाखों को सुखाने में में जुट जाते थे। घाट को सबसे सुंदर कैसे बनाना है हम बच्चे ही निर्णय लेते थे। छठ के पहले दिन नहा खाय के बाद दूसरे दिन खरना मनाया जाता हैं। शाम को केले के पत्ते पर पुरी-खीर, केला, सेब, मूली आदि रख कर पूजा की जाती थीं।

अगले दिन संध्या अर्घ्य होता था और हम जितने बच्चे थे सभी संध्या अर्घ्य वाली सुबह को घाट की साफ सफ़ाई और घाट सजाने के काम में काफ़ी व्यस्त हो जाते थे। उसके बाद डाला को सजाने का काम भी हमलोग करते थे। शाम को संध्या अर्घ्य होता था जिसमें गाँव के सभी लोग डुबते हुए सूरज को अर्घ्य देते थे और हर माँ अपने बच्चों की सफलता और लम्बी उम्र की कामना करती थी। उसके कल की सुबह होता था- “भोरिया अरख” मतलब सुबह ३-४ बजे के बीच उठना फिर नहा धो कर तैयार होना, फिर डाला ले घाट जाना। ऐसा लगता था मानो की दुनिया की सारी ख़ुशियाँ यही हैं। प्रातः पूजा सम्पन्न होने के बाद प्रसाद वितरण होता था। आज भी इन यादों को दिल में सँजो के रखा हूँ। दिल चाहता है फिर से वही ज़िंदगी जीने को पर अब ज़िम्मेदारियों का बोझ हैं फिर किसी साल छुट्टी ले कर पुरानी यादों को ताज़ा करने चले जाते है, अपने गाँव।

चुने हुए ईश्वर

- श्री बिजित गोरा रामसियारी,
पिऊन/निर्माण

लोग जिस इंसान को ईश्वर मानते रहे,
और उस ईश्वर को मन्दिर-मस्जिद में चुनते रहे,
लोग जिस ईश्वर को हार और मुकुट पहनाते रहे,
आखिर उस ईश्वर ने एक दिन अपनी महिमा दिखा दी,
अचानक उन तक पहुंचने का सारा दरवाजा बंद हो गया,
और ईश्वर का अदृश्य होने पर लोगों में बवाल मच गया,
लोग उनके दरबार में भूखा, बेघर, बेरोजगार, असहाय,
असुरक्षित से -

पीढ़ी के बाद पीढ़ी अपने ईश्वर को ढूंढने में लग गई,
अब भी भक्तगण, सिर झुकाए इंतजार में बैठा है,
उसी नई पुरानी ईश्वर जैसी बुत के सामने,
लेकिन भले ही चुने हुए ईश्वर ही क्यों न हो,
आदमी के लिए ईश्वर तक पहुंचना,
क्या जिन्दा रहते - बस की बात है ?

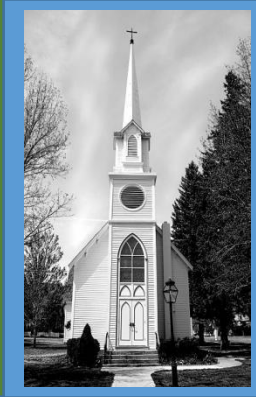

असमिया समाज और उनकी संस्कृति

- **श्रीमती गायत्री मिलि, वरिष्ठ अनुवादक/निर्माण**

असम भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित है और जनसंख्या की दृष्टि से यह सबसे बड़ा पूर्वोत्तर राज्य है। जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से यह दूसरे स्थान पर है। असम का क्षेत्रफल 78,438 स्क्वायर कि.मी. (30,285 वर्ग मील) है। राज्य की सीमा उत्तर में भूटान और अरूणाचल प्रदेश राज्य से लगती है; पूर्व में नागालैण्ड, अरूणाचल प्रदेश और मणिपुर; दक्षिण में मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम और बांगलादेश तथा पश्चिम में पश्चिम बंगाल। असम का एक महत्वूपूर्ण भौगोलिक पहलू यह है कि इसमें भारत के छह भौगोलिक प्रभागों में से तीन शामिल हैं - उत्तरी हिमालय (पूर्वी पहाड़ियाँ), उत्तरी मैदान (ब्रह्मपुत्र मैदान) और दक्कन पठार (कार्बी आंगलॉग)।

असम की जनसंख्या मंगोलियन, इंडो बरमिश, इंडो ईरानियन तथा आर्यन मूल के एक विशाल जाति का अन्तर्मिश्रण (जिन्हें असम के अग्रज संतान के रूप में माने जाते हैं) को असमिया और इनकी मातृभाषा असामिज मानी जाती है।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार असम की कुल जनसंख्या 3.12 करोड़ है। इस प्रकार वर्ष 2011 में असम की जनसंख्या 31,205,576 थी जिसमें पुरूष 15939,443 थे जबकि महिलाएँ 15,266,133 थी। विभिन्न प्रकार के परंपरा, संस्कृति तथा परिधान और अलग-अलग प्रकार के रहन-सहन के तरीके हैं। अधिकतर समुदायों की अपनी मातृभाषा है। इन जनगोष्ठियों की सांस्कृतिक परंपराएँ और रीति-रिवाज अनोखे हैं जो लोगों को अचंभित कर देते हैं। बोड़ो, मिरी या मिसिंग, मिकि या कारबी, राभा, कछारी, लालूंग या तिवा डिमासा, देउरी जनजाति बड़ी संख्या में असम में है। असम के जनजातियाँ शिक्षा के क्षेत्र में बहुत आगे है तथा इन जनजातियों में भूमिहीन और श्रमिक श्रेणी बहुत कम है।

इसी प्रकार वर्मा के ऊपरी ईरावती क्षेत्र में बसने वाले शान जाति के लोग 13वीं शताब्दी में पटकाई की पहाडियों को पार कर ब्रह्मपुत्र घाटी में आए। धीरे-धीरे इन्होंने ब्रह्मपुत्र घाटी पर अपना आधिपत्य जमाया और अहोम राज्य की स्थापना की। अहोम के राजनीतिक शानकाल के छह सौ वर्ष के शासन काल के दौरान अपने सत्ता को मुगल साम्राज्य, भारत के मुसलमान हमलावर, ब्रिटिश तथा अन्य हमलावरों से मुक्त रखा। मुगलों ने असम में सतरह बार आक्रमण किया। 1824 ई. में ब्रिटिश ने असम में चाय बागानों में रोपक के रूप में प्रवेश किया। 1826 में यानदाबू संधी (Yandabu Treaty) के बाद ब्रिटिश ने असम को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद से ही धीर-धीरे अहोम राजवंश के विनाश का काल शुरू हुआ।

राजा चुकाफा

ब्रिटिशों के अलावा विभिन्न प्रवासी जो भारत के विभिन्न राज्यों से असम आए अपने साथ अलग-अलग सांस्कृतिक मान्यता, जाति प्रथा तथा दहेज प्रथा प्रणाली आदि भी साथ लाए। इन प्रवासियों ने असमिया सभ्यता को धीरे-धीरे अपना लिया परन्तु कुछ अभी भी अपने तरीके को ही अपनाये हुए हैं।
पूर्वोत्तर भारत के लोकभाषा के रूप में असमिया ही राज्य की प्रमुख भाषा के रूप में माना जाता है। विद्वानों ने असमिया साहित्य की उत्पत्ति द्वितीय शताब्दी (2nd Century AD) अर्थात् स्वर्ण युग से माना है। परन्तु साहित्यिक इतिहास के रिकार्ड में इसे 14 वीं से पाया जाता है।

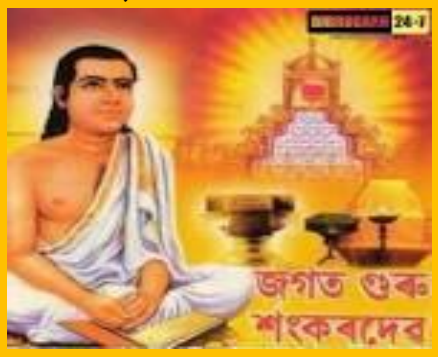

पन्द्रहवीं शताब्दी में असम में जो धार्मिक, सामाजिक क्रांति आई उसके अग्रदूत महापुरूष श्रीमंत शंकरदेव थे। असमिया समाज के कीर्तनघर या नामघर और सत्रा आदि के प्रवर्तक श्रीमंत शंकरदेव थे। उन्होंने "एकचरण-नाम-धर्मा" अर्थात् एक भगवान की पूजा का प्रचार किया था। दो महत्वपूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठान जो असम के सांस्कृतिक निर्माण में मुख्य भूमिका अदा करता है वह है सत्रा (Satra) जो 400 वर्षों से भी ज्यादा पुराना है तथा लोगों को धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा को बाँधे हुए है तथा

दूसरा है नामघर (प्रार्थाना घर)। अधिकांश असमीया हिन्दुत्ववाले लोग वैष्णव धर्म को मानते हैं। वैष्णव धर्मावलंबी लोग मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते हैं तथा भगवान विष्णु की महिमा का गुणगान नामक कीर्तन का पाठ करते हैं। आज असम के हर कोने में एक नामघर है और ग्रामीण लोग अपने स्थानीय सदस्यता के आधार पर अपने स्थान पर स्थित नामघरों में जाते हैं और नाम कीर्तन करते हैं। एक ही गाँव में भिन्न-भिन्न जाति, भेद तथा भाषा-भाषी के लोग एकजुट होकर रहते हैं। यद्यपि जाति प्रथा यहाँ भी है परन्तु भारत के अन्य राज्यों की तरह यहाँ पर इसे इतनी प्रधानता नहीं दी जाती है।

असम में अन्य धर्मावलम्बी जैसे बौद्ध धर्म, सिक्ख, इसाई, इस्लाम, आदि के लोग भी रहते हैं। बंगला बोलने वाले हिन्दु और मुसलमान सम्प्रदाय के लोगों तथा पास के नेपाली एवं अन्य समूहों को यहाँ अल्प संख्यक (Minority) के रूप में जाना जाता है। परन्तु असम में आहोम राजत्व के दिनों से लेकर ब्रिटिश शासन काल तक विभिन्न कारणों से बगदाद, पूर्वी बंगा (बंगलादेश) आदि जगहों से इस्लाम धर्म के लोग असम में आकर असम के जातीय जीवन के साथ घुल-मिल गए थे। जिन्हें परवर्ती समय में असमिया-मुसलमान के रूप में जाने जाना लगा और यह असम का एक अभिन्न अंग बन गए। इस्लाम धर्म के साथ ही असमिया भाषा में अरबी और पारसी शब्द भी मिलते हैं। मुसलमान पीर-फकीरों द्वारा रचना किए गए गीतों में भी अरबी-पारसी शब्द पाए जाते हैं।

पौराणिक काल से ही असम के लोग परम्परागत रूप में कलाकारी, मूर्तिकार, राजमिस्त्री, बुनकर, धागा कातने, हथकरघे, कुम्हार, सुनार, हाथी दांत के कलाकार, लड़की, बाँस, बेंत आदि में समृद्ध हैं। यहाँ की असमिया महिलाएँ हस्त शिल्प में काफी निपुण है। हर घर में एक हथकरघा रहना शान समझा जाता है। हैण्डलूम में असम सिल्क और कपास के कपड़ों के ऊपर बुनाई गई मनमोहक कलाकृतियों को प्रदर्शित करने में ये औरते माहिर हैं। ऐरी (Endi), मूगा (Muga) और पात (Silk) असम के महत्वपूर्ण सिल्क के सामग्रियाँ हैं। क्योंकि ये सामग्री पूर्वोत्तर के जलवायु में ही पाए जाते हे। गाँधी जी ने कहा था कि "असमिया हस्त शिल्पकार अपने सपनों को इन कपड़ों में उतारते हैं"।

गामोछा (Gamusa) असमिया लोगों का सांस्कृतिक प्रतीक है। साथ ही साथ, तामुल-पान (Areca-nut & Britle leaf) धार्मिक अनुष्ठानों का एक अभिन्न अंग माना जाता है। किसी प्रकार के धार्मिक अनुष्ठानों में पान-तामुल एक जरूरी सामग्री है तथा घर में अतिथि सत्कार का भी एक जरूरी अंग है। गामोछा, एक समकोणीय सफेद कपड़ा होता है जो हाथ से बुना जाता है जिसके तीन तरफ लाल रंग का किनारा होता है और चौथे तरफ लाल रंग के कुछ नमुने बुना होता है। जिसका प्रयोग असमिया समाज में विभिन्न रूप से किया जाता है। इसे बड़ों को बिहू में बिहूवान के रूप में भेंट किया जाता है। कभी-कभी इसे तावल, कभी कमरबंध और बिहू नाचने वाले इसे सिर को शुशोभित करने के लिए सिर पर बांधते हैं।

सामाजिक एवं सांसकृतिक प्रतीक आनंद के उत्साह बिहू असमिया लोगों का जातीय उत्सव है। कृषि केन्द्रीत असम के जनगण के प्रधान उत्सव बिहू तीन प्रकार के हैं। रंगाली (बहाग) बिहू, कंगाली (काति) बिहू और भोगाली (माघ) बिहू। ये तीनों कृषि केन्द्रित बिहू वर्ष के विभिन्न जाति-जनजाति के सांस्कृतिक समन्वय के माध्यम से बिहू उत्सव का जन्म हुआ। असम के जातीय जीवन में सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है बहाग बिहू। यह अप्रैल महीने के मध्य में मनाया जाता है। माघ बिहू या भोगाली बिहू जनवरी माह के मध्य में मनाया जाता है। काति बिहू अक्टूबर महीने के बीच में मनाया जाता है। आश्विन माह के संक्रांति के दिन ही काति बिहू मनाया जाता है।

बिहू नृत्य असमिया लोक संस्कृति का एक अमूल्य संपद है। बिहू असम का एक जनप्रिय लोक नृत्य है। बिहू उत्सव के समय जवान लड़के-लड़कियाँ बिहू नृत्य-गीत करते हैं। बिहू गीत के माध्यम से लड़के-लडकियाँ अपने प्रेम का इजहार भी करते हैं। बिहू नृत्य में व्यवहार किए जाने वाले वाद्य यंत्र समूह

है - ढोल, पीपा, तका, गगणा और ताल। बिहू के अलावा असम में विभिन्न लोक नृत्य जैसे असम के शास्त्रीय नृत्य है, जो असम के सत्रिय परम्परा को दर्शाता है। इसी प्रकार बरपेटा के भुरताल नृत्य, चाय-बागानों के झूमूर नृत्य, बोड़ो सम्प्रदाय के बागरूमबा नृत्य, मिसिंग लोगों के गुमराह नृत्य, देवधानी नृत्य आदि उल्लेखनीय है।

असम के उन्नीस पारंपरिक उत्पादों और शिल्पों को प्रतिष्ठित भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग दिया गया है, जिनमें से तेरह का श्रेय बोड़ो समुदाय को दिया जाता है। इन प्रतिष्ठित वस्तुओं में असम बिहू ढ़ोल, जापी, सार्थेबारी मेटल क्राफ्ट, पैनिमेटेका क्राफ्ट (जलकुंभी), मिसिंग टाट (हथकरघा), अशरिकांडी की उत्कृष्ट टेराकोटा कृतियाँ और जोथा, गोंगोना, गम्सा, सिफिंग, सेर्जा, खारडवी, खाम, गोंगर डुंडिया, थोरका, केराडापिनी, ज्वमगरा, दोखोना और एरी सिल्क शामिल हैं। इन उत्पादों का समृद्ध ऐतिहासिक महत्व है और ये लगभग एक लाख लोगों को प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करते हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि असम भारत का एक छोटा सा संसकरण है। अनेक जात-जनगोष्ठी, धर्म भाषा-संस्कृति की पृष्ठभूमि असम में अनेकता में एकता का मिशाल है।

बीते दिनों की यादें

- श्री अमर कुमार
सीनि. सेक्शन इंजीनियर/निर्माण/निविदा

नदी किनारे, दोस्तों का झुंड
हंसी-मजाक, खेलों का मौसम,
माँ के हाथ का स्वादिष्ट भोजन,
पिता का स्नेह भरा आशीर्वाद।
भाई-बहन का प्यार, संयुक्त परिवार,
हर पल खुशियों से भरा,
कोई गम ना था, कोई चिंता ना थी,
बस सुकून भरा जीवन था।
आज समय बदल गया,
संघर्षों का दौर है,
हर जगह धोखा, हर जगह बेईमानी,
खो गया वो सुकून, वो खुशियां ढूंढता हूँ मैं।
याद आते हैं वो दिन,
दोस्तों के साथ, नदी के किनारे,
माँ के हाथ का खाना खाकर,
पिता के चरणों में सिर रखकर सो जाना।
काश वो दिन लौट आएं,
काश वो पल वापस आएं,
जिसमें सिर्फ़ खुशियां थीं,
जिसमें सिर्फ़ प्यार था।
लेकिन ये सपना है,
वास्तविकता तो ये है,
कि हमें आगे बढ़ना होगा,
संघर्षों का सामना करना होगा।
उम्मीद है कि एक दिन,
फिर से वो खुशियां आएंगी,
और वो दिन भी आएगा,
जब यादें हसीन होंगी, न कि उदास।

"पुरी अनप्लग्ड: द ट्रैवेल डायरीज ऑफ ए फैंटास्टिक फोर"

श्री रवि रंजन कुमार, जूनियर इंजीनियर/निर्माण/अभिकल्प

शरद ऋतु के मध्य में, त्यौहारी सीजन ने अपना जादू दिखाया और हमारा हृदय आध्यात्मिकता की पुकार से गूँज उठा और हमारा साझा चुनाव पुरी का पवित्र शहर था, जो भगवान जगन्नाथ के प्रति अपनी गहन भक्ति के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। गुवाहाटी से पुरी तक का सफर शुरू करते समय हमें इस बात का अंदाजा नहीं था कि यह सफर हमारे दिलो-दिमाग पर एक सुनहरी याद बनकर अंकित हो जाएगा।

भारतीय रेल: कहानियों का पिटारा

कामाख्या स्टेशन पर पुरी एक्सप्रेस सिर्फ एक ट्रेन से कहीं अधिक थी; अगले दो रात और एक दिन के लिए हमारा आशय यही तो होने वाली थी, जहाँ नित दिन नई कहानियाँ बुनी जाती हैं। विभिन्न पृष्ठभूमियों के यात्री गाड़ी में भरे हुए थे और उनके बीच मेरे तीन साथी भी थे। ट्रेन कामाख्या से खुल चुकी थी। पटरियों पर ट्रेन के पहियों की लयबद्ध गड़गड़ाहट ने हमें शांत कर दिया। हमने अपने साथी यात्रियों के साथ इस लंबी लेकिन रूचिकर ट्रेन यात्रा का आनंद लिया। हम चार लोगों का एक समूह थे, प्रत्येक इस उल्लेखनीय यात्रा में अपने अद्वितीय दृष्टिकोण ला रहा था।

पुरी में आगमन; जगन्नाथ मंदिर के साथ श्रद्धापूर्वक मिलन

पुरी में आगमन भक्ति के क्षेत्र में कदम रखने जैसा महसूस हुआ। विशाल जगन्नाथ मंदिर क्षितिज पर छाया हुआ था, एक विस्मयकारी दृश्य जिसने हम सभी को स्तब्ध कर दिया। जैसे मंदिर का प्रांगण

आध्यात्मिकता से भरा हुआ था और हवा धुप की सुगंध और मंदिर की घंटियों की धुन से भरी हुई थी। एक साथ हमने भक्ति और आश्चर्य की दुनिया में प्रवेश किया। हम चारों एक लंबी कतार में शामिल हो गए जो हमें मंदिर के पवित्र कक्षों से होकर ले गई। उत्कृष्ट नक्कासीदार मूर्तियाँ हमारी ओर देख रही थीं और आस-पास के भक्तों के चेहरों पर श्रद्धा की आत्मा उमर रही थी। गर्भगृह में हमने भगवान जगन्नाथ के साथ बहन सुभद्रा और बड़े भाई बलराम के दर्शन किए। हमारे समूह ने एक साझा आध्यात्मिक संबंध का अनुभव किया जिसने हमारे संबंध को और गहरा कर दिया।

<u>कोणार्क में प्राचीन वास्तुकला के साथ एक मुलाकात</u>

हमारी यात्रा हमें पुरी से आगे ऐतिहासिक शहर कोणार्क ले गई जहाँ मंत्रमुग्ध कर देने वाला सूर्य मंदिर है। हमने जटिल रूप से नक्काशीदार पत्थर की संरचनाओं को निहारा जो बीते युग की कहानी कह रहे थे। वास्तुकला प्राचीन कारीगरों की प्रतिभा का प्रमाण था और हमने इस विस्मयकारी विरासत के आश्चर्य को साझा किया।

<u>पुरी बीच पर शांति का आनंद</u>

पुरी का समुद्री तट हमारे सामने क्षितिज के अंत तक फैला हुआ था। हम चारों ने शांत तट पर घंटों बिताए, सीपियाँ एकत्र की और लहरों को रेतीले समुद्र तट को सहलाते हुए देखा। समुद्री हवा प्राचीन कहानियों को फुसफुसाती थी और लयबद्ध ध्वनि एक सुखद पृष्ठभूमि के रूप में काम करती थी।

एक सांस्कृतिक उत्सव

पुरी के केंद्र में हमने सुंदर ओडिसी नृत्य का प्रदर्शन करते हुए एक सांसकृतिक प्रदर्शन से खुद को मंत्रमुग्ध पाया। कलाकारों की तरल गतिविधियों और मनमोहक अभिव्यक्तियों ने ओडिशा की समृद्ध विरासत को श्रद्धांजलि दी। जैसे ही हमारी तालियाँ प्रदर्शन हॉल में गूंजी, यह कला और संस्कृति के लिए एक साझा प्रशंसा थी जिसने हमारे संबंध को और गहरा कर दिया।

कार्यस्थली की ओर वापसी

जैसे-जैसे हमारी यात्रा अपने समापन के करीब पहुँची, हमें एहसास हुआ कि हमने कुछ असाधारण अनुभव किया है, कुछ ऐसा जिसे हम चारों हमेशा संजोकर रखेगे। गुवाहाटी वापसी की ट्रेन यात्रा बातचीत, हँसी और कहानियों से भरी थी।

गुवाहाटी से पुरी तक की मेरी यात्रा सिर्फ एक शारीरिक यात्रा से कहीं अधिक थी; यह साझा अनुभवों, अविस्मरणीय कहानियों और पुरी के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चमत्कारों के साथ साझा संबंध की यात्रा थी। इस पवित्र शहर के दृश्य, ध्वनियाँ और स्वाद, मनोरम कोणार्क सूर्य मंदिर और शांत समुद्री तट हमेशा मेरे दिल में अंकित रहेंगे।

दुल्हन

- श्री सुजय साहा राय,
उप मुख्य बिजली इंजीनियर/मालीगाँव, मुख्यालय

हम दोनों ने तय किया था
एक गहरा लकीर खींचेंगे,
एक तरफ तुम होगी,
एक तरफ हम।
वादा था...
लकीर को हम पार नहीं करेंगे।
चाहे निकल जाए हमारा दम,
संसार के बीच ऐसे रहेंगे,
न कोई सुन सकेगा हमारे प्यार के धुन।
चली ऐसी कुछ बारह साल जैसी,
चुपके से चली हमारी प्यार ऐसी,
लगा मन में ऐसी,
कि बेरंगीन हम हो गए...
मानो सतरंगीन सिर्फ बारीश के बाद रह गई।
तभी आपने कानों में वह बात कह दी,
मेरी धरती हिल गई,
लक्ष्मण रेखा मिट गई,
पता नहीं कब चंद्रमा सूरज से मिल गया।
हम न मिलेंगे दोबारा कहाँ चल गया।
होश में आए तो...
आपके रंग में, हम रंगीन हो चुके थे,
कली से फूल हम आपको बना चुके थे।
वह रात में चाँद फिर निकल पड़ी,
तुम्हें छूते हुए चाँदनी बिखेर दी चारों ओर।
उस दिन से...
आप मेरा दुल्हन बन गई
जिस संसार से डरते थे
वह अपना सबसे प्यारा बन गई,
माँ का रूप क्या होता है?
उस क्षण से मैं जान ली।

विचार के लिए भोजन @ हम और हमारे बच्चे

- श्रीमती अर्चना दास, सीनि. से.
इंजीनियर/सामान्य-2

यह कहा जाता है कि "भोजन के बिना कोई जी नहीं सकता"। लेकिन आज के जमाने में इसे संशोधित रूप में कहा जा सकता है कि "जंक फूड बिना कोई जी नहीं सकता"। यह बात बिल्कूल असत्य है, हर कोई जानता है कि यह उल्टा है, पर क्यों ?

हमारे बच्चों का आहार अगर जंक फूड से भरा रहेगा तो उनका वजन बढ़ सकता है। शरीर का वजन एक पाउंड बढ़ने के लिए खाद्य में से अतिरिक्त 3500 कैलोरी लगता है। हमें उच्च कैलोरी, उच्च वसा (Fat) युक्त आहार की जगह फल, सब्जी, साबुत अनाज (Whole Grain) को स्थान देना है। एक स्वस्थ वजन बनाए रखने के लिए सटीक कैलोरी सीमा में रहना जरूरी है। साबुत अनाज, फल. सब्जी में होते रेशाओं (Fiber) ने चीनी और वसा से भरपुर खाद्य़ से ज्यादा देर के लिए भूख मिटाते हैं। जितना ज्यादा समय तक आप तृप्त रहेंगे, आपका कैलोरी रेंज बढ़ने का मौका कम है। मोटापा कम होगी। ताज्जुब की बात यह है कि दुनिया मोटापे के कारण मरनेवालों की संख्या भूख से मरने वालों से काफी ज्यादा है।

हमारे बच्चों के खाद्य अभ्यास में बहुत सी जंक फूड घुस गए हैं। मियामी विश्वविद्यालय के कुछ गवेषकों का खोज है कि सोडियम अधिक मात्रा में रहनेवाले खाद्य जैसे फ्रेन्स फ्राइज, पोटैटो चिप्स खाने से हृदय रोग और स्ट्रोक का खतरा प्रति 500 मिलीग्राम के लिए 17 प्रतिशत तक बढ सकता है। थोड़ा सा सोडियम हमारे शरीर की फ्लूड (Fluid) का संतुलन सामान्य बनाए रखने के लिए जरूरी है, लेकिन सोडियम को ज्यादा ग्रहण करने से ब्लड प्रेशर और स्ट्रोक का खतरा बढ़ता है। सोडियम सेवन कम करने से आपके रक्त-चाप को कम करने और दिल के स्वास्थ्य में सुधार लाने में मदद मिल सकती है। ज्यादा वसा (High Fat) वाले खाद्य का नियमित रूप से ग्रहण करने से कोलेस्ट्रॉल और ट्रिगलीसेरिड स्तर (Triglyceride level) को बड़ा सकता है जो धीरे-धीरे दिल के स्वास्थ्य को बिगाड़ सकता है।

शर्करायुक्त खाद्य जैसे सफेद रोटी (White Bread), फ्रुट जूस, सोड़ा और आईसक्रीम ब्लड शूगर को बढ़ावा देता है। धीरे-धीरे जाकर यह टाइप-2 डाइबिटिस का रूप ले सकता है। कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट्स जैसे- साबुत अनाज रोटी (Whole Grain Bread), ओटमील और ब्राउन राइस खून में चीनी को धीरे-धीरे

रिलीज करता है, जो ब्लड शुगर को नियंत्रण करता है। ज्यादा मीठा खाने से दांतों का भी नुकसान हो सकता है।

स्वस्थ आहार बच्चों का आत्म-सम्मान (Self Esteem) बढ़ाता है। हम जो आहार ग्रहण करते हैं वही हमारा बल-शक्ति, चपलता, समन्वयन, धैर्य, सहनशीलता, गति, वेग और प्रस्तुत करने का स्तर सब को संचालित करता है।

आहार हमारे दिमाग के साथ-साथ शरीर को भी उर्जा की आपूर्ति के लिए काम करता है और हमारे मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य और स्थिरता के साथ इसका सीधा संपर्क है। काम करने का, सीखने का, स्मरण शक्ति बढ़ाने का उपाय एक स्वस्थ, कम कैलोरीयुक्त आहार दे सकता है जिसमें रंगीन फलों और सब्जियों के साथ-साथ ओमेगा-3 फैटी ऐसीड (Omega-3 Fatty Acid) युक्त मछली शामिल हो।

एक स्वस्थ आहार आपको शारीरिक और मानसिक तौर पर योग्य बनाए रखते हैं। जब आप फिट रहेंगे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और कोई भी निषेध नहीं रहेगा। आप ज्यादा बहिर्गामी रहेंगे, आपको जीवन जीने की क्षमता बढ़ेगी। अस्वस्थ आहार चयन करने वाले मोटापा और बीमारी की तरफ बढ़ते जाते हैं, परिवार और दोस्तों के साथ सामाजिक होने में, उर्जा शक्ति को उभार आने में ये बाधा डालती है।

एक स्वस्थ और संतुलित आहार आपको एक सम्पूर्ण और लाभकारी सामाजिक जीवन बिताने की शक्ति देता है। अगर बुरा भोजन के अभ्यास को छोड़ना आपके लिए एक समस्या है, तो आप एक चिकित्सक या डाइटीशियन से अपनी जीवनशैली और खाद्य पदार के अनुसार बेहतर भोजन विकल्प के लिए बात कर सकते हैं।

हिंदी कार्यशालाएँ

दिनांक **18.03.2024 से 22.03.2024** तक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 64 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्रीमती शर्मिला तायें, सहा. निदेशक, गृह मंत्रालय ने कार्यालयीन हिंदी, श्री निपन बरदोलई, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय नें हिंदी टिप्पण एवं मसौदा लेखन, श्री नवकुमार राय, वरि.अनुवादक/नि. ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट के विभिन्न मदों पर व्याख्यान दिया। श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/नि. ने हिंदी कुंजीयन तथा हिंदी वॉयस टाइपिंग का प्रशिक्षण प्रदान किया।

दिनांक **19.06.2024 से 21.06.202**4 तक तथा **24.06.2024 और 25.06.2024** को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 30 कर्मचारीगण शामिल हुए। श्रीमती शर्मिला तायें, सहा. निदेशक, गृह मंत्रालय ने कार्यालयीन हिंदी, श्री निपन बरदोलई, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय नें हिंदी व्याकरण व हिंदी के प्रयोग में हुए अशुद्धियों का निराकरण, श्री विक्रम सिंह, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), पू.सी.रेल ने राजभाषा की सांविधानिक स्थिति एवं राजभाषा नियम पर व्याख्यान दिया तथा श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/नि. ने हिंदी वॉयस टाइपिंग तथा हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण प्रदान किया।

रेल की जवानी

- मो. नुरूल ऐन, आशुलिपिक/निर्माण, कटिहार

बचपन में हम छुक-छुक करते लाल डिब्बे से पहचाने जाते,
उस समय मेरी औकात नहीं थी इसलिए हम चुप ही रहते,
भारत को प्रगति पथ पर लाने की जिम्मवारी मिली जब,
जीवन रेखा बन कर सब के सपनों को साकार किया तब,
अब नई जवानी आई है पल-पल मेरा रंग बदलता।

देश के कोने-कोने में एक अकेला सजता रहता,
लोगों में पहचान बन कर मुश्किल का समाधान बना हूँ,
युवा पीढ़ी की धड़कन बन कर देश का सम्मान बना हूँ,
कोई कुछ भी कर ले अब नहीं मैं रूकने वाला,
हर प्रांत में घूम-घूम कर रेल बना एक सुन्दर माला।

सफर

- मो. नुरूल ऐन, आशुलिपिक/निर्माण, कटिहार

कारण तलाश कर अपने हार जाने का,
किसी की जीत पर रोने से क्या होगा?
अगर है ख्वाब की ख्वाहिश तो जागना सीखो,
यूँ आँख मूँद कर सोने से क्या होगा?
समस्या कोई आन पड़े तो घबराना नहीं।

जीने की तरकीब निकाल, मर जाने से क्या होगा?
तू एक मुसाफिर है, अपने कर्तव्य का पालन कर,
वह दिन अब दूर नहीं, जब विकसित भारत का परचम लहराएगा।
रेल में हमने बचपन देखा, अब नई जवानी आई है,
वन्दे भारत एक उदाहरण है, बूलेट की सवारी आनी है।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/ निर्माण की बैठक

मंगलवार, दिनांक 27.02.2024

श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक (निर्माण) राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अद्यक्षता करते हुए।

श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) की अध्यक्षता में क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की अक्टूबर-दिसम्बर, 2023 तिमाही की बैठक मंगलवार, दिनांक 27.02.2024 को आयोजित की गई। इस बैठक में तकनीकी संगोष्ठी के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किए गए मालीगाँव स्थित पूर्वोत्तर सीमा रेल, केन्द्रीय अस्पताल के अपर मुख्य स्वास्थ्य निदेशक डॉ. श्री सोमनाथ साहा को श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक (निर्माण) द्वारा फूलाम गामोछा से स्वागत करने से बैठक का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण सह मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यालय का राजभाषा विभाग अपने रूटीन कार्य के अलावा स्टेशन संचालन नियम, फाटक संचालन अनुदेश का द्विभाषीकरण का कार्य निष्पादित कर रहा

है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि डॉ.श्री सोमनाथ साहा की इस बैठक में विशेष उपस्थिति से हम सभी सदस्य लाभान्वित होंगे। डॉ. श्री सोमनाथ साहा ने उक्त तकनीकी संगोष्ठी में स्वस्थ और तनावमुक्त जीवन जीने का रहस्य विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् श्री साहा को महाप्रबंधक/निर्माण श्री सतीश कुमार पाण्डेय ने स्मृति चिह्न प्रदान की। बैठक के अध्यक्ष श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक, पू.सी.रेल (निर्माण) ने उपस्थित सभी अधिकारियों से कहा कि डॉ. सोमनाथ साहा द्वारा सुझाए गए उपाय बड़े ही बहुमूल्य हैं और यदि इन सुझाव का सही-सही अनुपालन किया जाए तो हम सभी अपने कार्यालय के काम सहज रूप से सम्पन्न करते हुए अपना दैनिक जीवन तनावमुक्त जी सकते हैं। श्री पाण्डेय ने यह भी कहा कि निर्माण संगठन भारत में दस राज्यों में निर्माण कार्य कर रही है जिनकी अलग-अलग भाषाएँ हैं परन्तु इन सभी राज्यों में एकता कायम करने के लिए हिंदी भाषा ही एक सशक्त माध्यम है। इसको ध्यान में रखते हुए निर्माण संगठन के हम सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण का कर्तव्य है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार की प्रगति को और तेज गति से बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन योजनाएँ चलाई जानी चाहिए। अत: हिंदी प्रशिक्षण के लिए शेष बचे कर्मचारियों को जल्द से जल्द पूरा करवा लिया जाए। साथ ही, हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण के लिए शेष बचे आशुलिपिकों को प्रशिक्षण की व्यवस्था आउटसोर्सिंग से भी यदि करवाया जा सके तो जल्द से जल्द पूरा करवा लें। बैठक में निर्माण संगठन के राजभाषा विभाग द्वारा ऑनलाइन हिंदी पत्रिका संवाद-पत्र के 59वें अंक (हिंदी साहित्यकार विशेषांक) का विमोचन भी महाप्रबंधक (निर्माण) श्री सतीश कुमार पाण्डेय के कर-कमलों से किया गया। विमोचन किए गए इस पत्रिका को पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) के हिंदी वेबसाइट पर देखा जा सकता है। बैठक का संचालन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण एवं धन्यवाद प्रस्ताव श्री अमोल चंद्रकांत इंगले, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण सह उप मुख्य इंजीनियर/निर्माण (सर्वेक्षण) ने किया।

रेलवे बोर्ड के दिनांक 11.07.2018 का पत्र सं.हिंदी- 99/रे.रा.भा./3 के अनुसार रेल कार्यालयों द्वारा हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाओं में प्रकाशित मौलिक लेखों के लेखकों की मानदेय दिए जाने के संबंध में।

(क)	**लेख/कहानी/नाटक**	**1000/- रूपए (एक हजार रूपए मात्र)**
(ख)	**कविता/पुस्तक समीक्षा**	**400/- रूपए (चार सौ रूपए मात्र)**
(ग)	**कार्टून/चित्र**	**300/- रूपए (तीन सौ रूपए मात्र)**

अत: महाप्रबंधक (निर्माण) संगठन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से विनम्र अनुरोध है कि आप स्वयं अथवा आपके परिवार के सदस्यों द्वारा रचित रचनाओं को आगामी प्रकाशित होने वाली पत्रिका में प्रकाशित करने के लिए राजभाषा अधिकारी, पू.सी.रेल / निर्माण के पास यथाशीघ्र भेजें और ऊपर निर्धारित मानदेय का लाभ उठाएँ।

रेल का सुखद अनुभव

- मो. नुरूल ऐन, आशुलिपिक/निर्माण, कटिहार

यात्रा का विचार मेरी धर्म पत्नी की चिल्लाहट से प्रकट हुई कि अगर मायके नहीं ले कर जाओगे तो घुमाने के लिए कहीं ले चलो। बच्चों की स्कूल की छुट्टी है। अगर हम ना कहते तो आफत और हाँ कहते तो बजट पर आफत। चूँकि घर स्वर्ग बना रहे हमने हाँ कर दी।

सपने संजोते हुए दार्जिलिंग घूमने को सोचा। पहला विकल्प रेल में रिजर्वेशन का था। प्रयत्न किया सफल हुआ। धरम पत्नी एवं बच्चे को लेकर मुसाफिर चला। रास्ते का पूंजी खान-पान, वस्त्र आदि का जुगाड़ किया।

सिलीगुड़ी जं. रेलवे स्टेशन

दार्जिलिंग रेलवे स्टेशन

सिलीगुड़ी से यात्रा प्रारंभ हुई। ट्रेन में बैठ गए। सुखद अनुभव का एहसास उत्तम संसार के अद्भूत नजारों को देख कर मानो स्वर्ग की सैर कर रहा हूँ। सचमुच भारत विश्व का सर्वोत्तम देश है जिसमें प्रकृति के सारे रंग पाए जाते हैं।

बच्चे अपने मन पसंद हरियाली पहाड़ पगडंडी पर ट्रेन को दौड़ता देख मानो अपने पिता का ढेर सहानुभूति प्राप्त कर लिया हो। ठंड का एहसास कर्सियांग से अनुभव होने लगती है। बैग से कपड़े निकलने लगे। एक दो तीन अरे यह क्या ? गर्मी में जाड़े का एहसास ! गजब हो गया। मई की तप्ती गर्मी में निकला था, मगर यहाँ सबकुछ बर्फीली ठंड के सुनहरे चादरों ने चारों ओर से मानो ढंक लिया हो। सब के सब ठिठुरने लगे और गरम कपड़े खोजने लगे।

शाम को दार्जिलिंग पहुँचा। खान-पान के बाद केवल यह विचार आया कि अगर वस्त्र पर्याप्त मात्रा में न लाता तो नानी याद आ जाती। पानी की शीतलता मानो आधुनिक उपलब्धियों का मजाक उड़ा रही हो।

वहाँ की सुंदर मनमोहक नजारों का विवरण शब्दों में पिरोना असंभव होगा। परिश्रम से पहलवान बन सकता है तो पहाड़ों के सीना को चीर कर झरनों का निकलना एक अकल्पनीय सुखद अनुभव को दर्शाता है।

अंत भला तो सब भला। पत्नी के चेहरे पर खुशहाली भरा मुस्कान देख कर बजट पर पड़ने वाला बोझ हल्का लगने लगा। सकुशल घर को लौटा और जीवन शैली की दिनचर्या में व्यस्त हो गया।

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक

शुक्रवार, 07 जून, 2024

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/नि. की बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक, (निर्माण)

श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) की अध्यक्षता में क्षेत्रीय राजभाषा

कार्यान्वयन समिति/ निर्माण की जनवरी-मार्च, 2024 तिमाही की बैठक शुक्रवार दिनांक 07.06.2024 को आयोजित की गई। इस बैठक में श्री विजय किटके, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1, श्री पी.के. क्षत्रिय, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2 एवं श्री राजीव कुमार सिंह, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-3 तथा अन्य विभागाध्यक्ष और अधिकारीगण उपस्थित थे।

श्री आशुतोष कुमार मिश्र, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण सह मुख्य इंजीनियर/निर्माण-6 ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यालय का राजभाषा विभाग अपने रूटीन कार्य के अलावा स्टेशन संचालन नियम, फाटक संचालन अनुदेश का द्विभाषीकरण का कार्य निष्पादित कर रहा है।

बैठक के अध्यक्ष श्री सतीश कुमार पाण्डेय, महाप्रबंधक, पू.सी.रेल (निर्माण) ने मुख्य इंजीनियर/निर्माण-6 को मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण का पदभार ग्रहण करने के लिए बधाई दी। उन्होंने भाषा प्रशिक्षण को गंभीरतापूर्वक लेते हुऐ अहिंदी भाषी क्षेत्र में अप्रशिक्षित कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिलवाने पर जोर दिया और हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाए जाने के उपाय सुनिश्चित करने को कहा। इसके अलावा निर्माण संगठन से प्रकाशित होने वाली गृह पत्रिका की प्रतियाँ निर्माण मुख्यालय के अलावा फील्ड यूनिटों में भी भेजने का सुझाव दिया। शेष बचे आशुलिपिकों के हिंदी भाषा प्रशिक्षण को यथाशीघ्र पूरा किए जाने का भी सुझाव दिया है। बैठक के दौरान श्री प्रदीप कुमार हीरा, उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/निर्माण द्वारा "रेल कर्मचारियों पर लागू विभिन्न भत्तों" से संबंधित संकलित पुस्तक पर संज्ञान लेते हुए महाप्रबंधक, पू.सी.रेल (निर्माण) ने उन्हें प्रोत्साहित किया। इस संबंध में राजभाषा अधिकारी/निर्माण श्री राजेश रंजन कुमार ने कहा कि अहिंदीभाषी होते हुए भी श्री प्रदीप कुमार हीरा द्वारा संकलित पुस्तक राजभाषा के क्षेत्र में एक सराहनीय कदम है एवं यह अन्य अहिंदीभाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए अनुकरणीय है।

श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने जनवरी-मार्च, 2024 की क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुत की। बैठक का संचालन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी /निर्माण एवं धन्यवाद प्रस्ताव श्री अमोल चंद्रकांत इंगले, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/ निर्माण सह उप मुख्य इंजीनियर/ निर्माण (सर्वेक्षण) ने किया।

हिंदी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है। उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनभव होना चाहिए।

राष्ट्रभाषा किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

- सरदार वल्लभभाई पटेल

क्षेत्रीय हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता

दिनांक 26.06.2024 से 28.06.2024 तक

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 26.06.2024 से 28.06.2024 तक क्षेत्रीय हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें कुल 21 (इक्कीस) प्रतियोगी भाग लिए। दिनांक 26.06.2024 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता में कुल 08 (आठ) प्रतियोगी भाग लिए। उसमें सुश्री प्रिया रानी दास, कनिष्ठ लिपिक/ नि. ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दिनांक 27.06.2024 को टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में कुल 07 (सात) प्रतियोगी भाग लिए। उसमें श्री कुलदीप तिवारी, सीनियर सेक्शन इंजीनियर/ योजना/ नि. ने प्रथम स्थान हासिल किया। दिनांक 28.06.2024 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता में कुल 06 (छः) प्रतियोगी भाग लिए। उसमें सुश्री रत्ना रानी देब, ट्रैकमैन-3/ नि./ योजना ने प्रथम स्थान ग्रहण किया। दिनांक 28.06.2024 को आयोजित वाक् प्रतियोगिता में श्री दीपक विश्वास, उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी/निर्माण, श्री धीरेन्द्र राय, सहायक कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण, श्री अचल कुमार सिंह, सहायक कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण निर्णायक मंडली के सदस्य के रूप में उपस्थित थे। क्षेत्रीय हिंदी निबंध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा वाक् प्रतियोगिता का संचालन श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण मालीगाँव ने किया।

भरत का प्रयास

- राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण

शोक सन्तप्त हुए भरत
सुन, पिता हुए स्वर्गवासी,
पितृतुल्य भैया हुए वनवासी,
माता सम भाभी साथ गई,
प्रिय अनुज भी साथ छोड़ गया
हाय! भाग्य मेरा फुट गया।
कहा, दुःख पर दुःख दिया मुझे,
थोड़ी भी लज्जा न आई तुझे।
बन गई माता तू कुलकलंकिनी,
शोकाकूल न हुई तू हे! पापिनी।
भेजा वन को वल्कल पहनाकर,
स्तब्ध हुआ तेरा, उद्येश्य जानकर।
भार राज्य का महाविकट,
सह न सकूँगा यह संकट।
मनोकामना न होगी पूर्ण तेरी,
धिक्कार है तुझे, तू माता मेरी।
इक्ष्वाकुवंशी रीति सदा चली आयी,
राज्याभिषेक ज्येष्ठ पुत्र ही पायी।
अनुजों का कार्य बन अनुयायी,
राजधर्म निभाने की शिक्षा पायी।
यह ले! मैं भी वन गमन करूँगा,
हे! क्रूर हृदय तेरा परित्याग करूँगा।
श्री राम को वापस लौटा लाऊँगा।
अनुज संग हम सब दास बन कर,
निष्पाप जीवन व्यतीत करूँगा।

भरत का उत्तम वचन सुन,
हर्षित हुए सब सभा-सद
शुरू हुआ राजधर्म का निर्माण
अयोध्या से गंगातट तक।
दिया तुरंत आदेश सुमंत को,
करें प्रस्थान सेना-समाज सह वन को।
तय कर लंबे मार्ग किया विश्राम
गंगा तट था श्रृंगवेरपुर का,
निषादराज करने को निराकरण संदेह का।
खुलकर पूछा भरत से उद्येश्य आपका,
प्रयासरत हूँ, रघुनाथ को लौटा लाने का।
मिला आश्वासन निषादराज से सहयोग का,
मुनि भारद्वाज सहित चित्रकूट चल पड़े भरत
शोक संतप्त भरत, दीनवाणी में हा!आर्य पुकारा
श्री राम ने अनुज भरत को दिया सहारा।
भरत राज्य ग्रहण का किया बार-बार अनुरोध
भरत बारंबार राज्य ग्रहण की की याचना,
तोड़ न सकता जो दी पिता को मैंने प्रतिज्ञा,
भरत, तुम जाओ राज करो, देता हूँ मैं आज्ञा
की भरत ने पादुकाएँ चरणों में अर्पित,
कर स्पर्श, चरणों से किया पादुकाएँ समर्पित।
कहा भरत ने भार राज्य का रहेगा पादुका पर
विदा लिया, भरत रखकर, पादुका सिर पर,
जाकर नंदीग्राम, पादुका को किया स्थापित,
हुआ भरत, अब योगक्षेम हेतु समर्पित।।